SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारत–रूस सैन्य सम्बन्ध

रमन उपाध्याय, (Ph.D.), राजनीति शास्त्र विभाग,
श्री मंगलसेन भारतीय इण्टर कालेज, शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author

रमन उपाध्याय, (Ph.D.), राजनीति शास्त्र विभाग,
श्री मंगलसेन भारतीय इण्टर कालेज,
शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/04/2022
Revised on : -----
Accepted on : 18/04/2022
Plagiarism : 01% on 11/04/2022

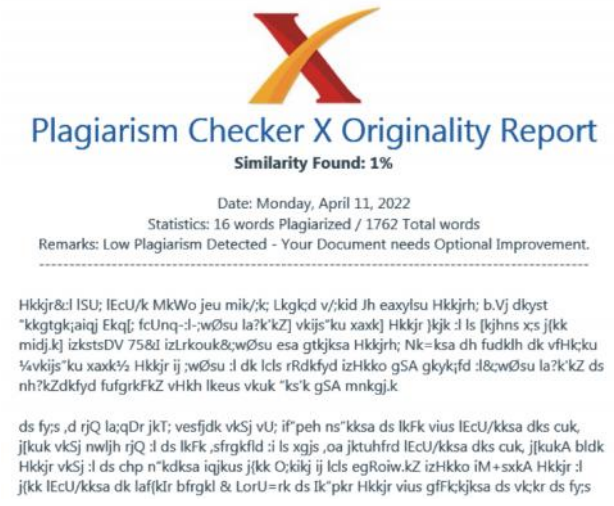

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Monday, April 11, 2022
Statistics: 16 words Plagiarized / 1762 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Hkkjr&l lSU; lEcU/k MkWo jeu mik/;k; Lkgk;d v/;kid Jh eaxylsu Hkkjrh; b.Vj dkyst "kkgtgk;aiqj Ekq[; fcUnq-:l-:wØsu la?k'kZ] vkijs"ku xaxk] Hkkjr]kjk :l ls [kjhns x;s j[kk midj.k] izkstsDV 75&l izLrkouk&;wØsu esa gtkjksa Hkkjrh; Nk=ksa dh fudklh dk vfHk;ku ¼vkijs"ku xaxk½ Hkkjr ij ;wØsu :l dk lcls rRdkfyd izHkko gSA gkyk;fd :l&;wØsu la?k'kZ ds nh?kZdkfyd fufgrkFkZ vHkh lkeus vkuk "ks'k gSA mnkgj.k

ds fy;s ,d rjQ la;qDr jkT; vesfjdk vkSj vU; if"peh ns"kksa ds lkFk vius lEcU/kksa dks cuk, j[kuk vkSj nwljh rjQ :l ds lkFk ,sfrgkfld :i ls xgjs ,oa jktuhfrd lEcU/kksa dks cuk, j[kukA bldk Hkkjr vkSj :l ds chp n"kdksa iqjkus j{kk O;kikj ij lcls egRoiw.kZ izHkko iM+sxkA Hkkjr :l j{kk lEcU/kksa dk laf(kIr bfrgkl & LorU=rk ds Ik"pkr Hkkjr vius gfFk;kjksa ds vk;kr ds fy;s

शोध सार

रूस के साथ भारत की विदेश नीति संबंध एक प्रमुख स्तंभ के रूप में रहा है। वर्तमान में रूस– यूक्रेन युद्ध ने भारत के सामने चुनौती प्रस्तुत किया है। एक तरफ भारत को संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के साथ अपने संबंधों को बनाए रखना है वहीं दूसरी तरफ रूस के साथ अपने रणनीतिक और ऐतिहासिक संबंधों को बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण विषय है। रूस–यूक्रेन युद्ध के समयावधि बढ़ने से भी विदेश नीति कहीं न कहीं प्रभावित होने वाली है इसलिए भारत को भी बहुत सी समस्याएं सामने आती दिखाई दे रही हैं, क्योंकि साल 2020 तक भारतीय फौज में रूसी हथियार और उपकरणों की हिस्सेदारी करीब 60 फ़ीसदी थी। भारत और रूस दोनों अभी के परिदृश्य के हिसाब से मजबूत साझेदार बने हुए हैं।

मुख्य शब्द

रूस–यूक्रेन संघर्ष, आपरेशन गंगा, रक्षा उपकरण, प्रोजेक्ट 75–I.

प्रस्तावना

यूक्रेन में हजारों भारतीय छात्रों की निकासी का अभियान (आपरेशन गंगा) भारत पर यूक्रेन रूस का सबसे तत्कालिक प्रभाव है। हालाँकि रूस–यूक्रेन संघर्ष के दीर्घकालिक निहितार्थ अभी सामने आना शेष है।

उदाहरण के लिये एक तरफ संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के साथ अपने सम्बन्धों को बनाए रखना और दूसरी तरफ रूस के साथ ऐतिहासिक रूप से गहरे एवं राजनीतिक सम्बन्धों को बनाए रखना। इसका भारत और रूस के बीच दशकों पुराने रक्षा व्यापार पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।

भारत रूस रक्षा सम्बन्धों का संक्षिप्त इतिहास

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत अपने हथियारों के आयात के लिये लगभग पूरी तरह से ब्रिटिश और अन्य पश्चिमी देशों पर निर्भर था। हालाँकि समय के साथ यह निर्भरता कम होती गई और 1970 के दशक के बाद से भारत यू0एस0एस0आर0 से कई हथियार प्रणालियों का आयात कर रहा था, जिससे यह दशकों तक देश का सबसे बड़ा रक्षा आयातक बन गया। रूस ने भारत को कुछ सबसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण हथियार प्रदान किए जिनकी भारत को समय.समय पर आवश्यकता पड़ती रहती है। इसमें परमाणु पनडुब्बी, विमान वाहक, टैंक, बंदूकें, लड़ाकू जेट व मिसाइल शामिल है।

एक अनुमान के अनुसार भारतीय सशस्त्र बलों में रूसी मूल के हथियारों और प्लेटफार्मों की हिस्सेदारी 85 प्रतिशत है। संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद रूस दुनिया का सबसे बड़ा हथियार निर्यातक है। हथियारों के हस्तान्तरण के मामले में रूस के लिये भारत सबसे बड़ा आयातक है।

वर्ष 2000 और वर्ष 2020 के बीच रूस, भारत को हथियारों के आयात के 66.5 प्रतिशत हिस्से के लिये उत्तरदायी था। वर्ष 2016 और वर्ष 2020 के बीच भारत को हथियारों के आयात ने रूस की हिस्सेदारी लगभग 50 प्रतिशत तक कम हो गई थी, लेकिन यह अभी भी सबसे बड़ा एक आयातक बना हुआ है।

रूस द्वारा भारत को बेचे गये रक्षा उपकरण

1. **फ्रिगेट और गाइडेड–मिसाइल डिस्ट्रॉयरः** नौसेना के दस गाइडेड मिसाइल विध्वंसक में से चार रूसी आशीन श्रेणी के है और इसके 17 युद्धपोतों में छः रूसी तलवार श्रेणी के है।
2. **पनडुब्बीः** भारत को अपनी पहली पनडुब्बी भी सोवियत संघ से प्राप्त हुई थी। यू0एस0एस0आर0 से खरीदी गई पहली फॉक्सट्राट क्लास पनडुब्बी ने वर्ष 1967 में आई0एन0एस0 कलवरी के रूप में भारतीय सेना में प्रवेश किया था। भारतीय नौसेना के पास कुल 16 पारंपरिक डीजल–इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों में से आठ सोवियत मूल की निम्न श्रेणी की है। भारत के पास चार में से एक स्वदेश निर्मित परमाणु बैलेस्टिक पनडुब्बी है जिसे विकसित किया जा रहा है। उनमें से कई रूसी तकनीकि पर आधारित है।
3. **विमान वाहकः** भारत की सेवा में एकमात्र विमान वाहक आई0एन0एस0 विक्रमादित्य एक सोवियत निर्मित कीव श्रेणी का पोत है जो वर्ष 2013 में भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था।
4. **लड़ाकू विमानः** भारतीय वायुसेना का 667 विमान फाइटर ग्राउण्ड अटैक (एफ0जी0ए0) बेड़ा 71 प्रतिशत रूसी मूल [39 प्रतिशत SU-305 (सुखोई), 22 प्रतिशत MIG-21_S, 9% MIG 29_S] का है। सेवा में शामिल सभी छः एयर टैंकर रूस निर्मित IL-78_S है।
5. **मिसाइल कार्यक्रमः** भारत जल्द ही ब्रम्होस मिसाइल का निर्यात शुरू करेगा, इसे रूस के साथ संयुक्त रूप से विकसित किया गया है। भारत का महत्वपूर्ण मिसाइल कार्यक्रम रूस या सोवियत संघ की मदद से विकसित किया गया था।
6. भारतीय सेवा का मुख्य युद्धक टैंक मुख्य रूप से रूसी T-72M1(66%) और $T90_S$(30%) से बना है।
7. इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रैटजिक स्टडीज के अनुसार भारत का वर्तमान सैन्य शस्त्रागार रूस द्वारा निर्मित या डिजाइन किये गये उपकरणों से भरा हुआ है।
8. भारत में रूस का अधिकांश प्रभाव हथियार प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों को प्रदान करने की उसकी सम्मति के कारण है जिसे कोई अन्य देश भारत को निर्यात नहीं करेगा।

अमेरिका केवल गैर–घातक रक्षा तकनीकि प्रदान करता है जैसे सी–130 जे सुपर हरक्यूलिस, सी–13 ग्लोबमास्टर, पी–8 आई पोसीडॉन आदि। जबकि रूस ब्रम्होस सुपरसोनिक मिसाइल, एस–400 एंटी मिसाइल सिस्टम जैसी उच्च तकनीकि मुहैया कराता है। रूस भी अपेक्षाकृत आकर्षक दरों पर उन्नत हथियारों की पेशकश जारी रखता है।

रूस तथा यूक्रेन युद्ध का भारत की सैन्य आपूर्ति पर प्रभाव

भारत और रूस के बीच दो बड़े रक्षा सौदे हुये है जिनपर मौजूदा संकट का प्रभाव पड़ सकता है। S-400 ट्रायम्फ एयर–डिफेंस सिस्टम डील–यह सौदा अमरीकी प्रतिबंधों के कारण खतरे में है, यहां तक कि अमेरिका ने अभी तक इस पर फैसला नहीं लिया है। हालांकि रूस पर नए दौर के प्रतिबंध इस सौदे को खतरे में डाल सकते हैं। दोनों देश मिलकर संयुक्त पनडुब्बी के विकास की योजना पर प्रयासरत है। रूस चार अन्य अन्तर्राष्ट्रीय बोली दाताओं के साथ प्रोजेक्ट – 75-I के तहत नौसेना हेतु छः एयर इंडिपेंडेन्ट प्रोपल्शन (AIP-संचालित) पारंपरिक पनडुब्बियों को बनाने के लिये भी प्रयासरत् है। भारत के दो परमाणु बैलेस्टिक पनडुब्बियों–चक्र 3 और चक्र 4 को पट्टे पर देने हेतु रूस के साथ बातचीत कर रहा है, जिनमें से पहली पनडुब्बी की आपूर्ति वर्ष 2025 तक होने की उम्मीद जताई जा रही है।

यूक्रेन पर हमला बोलने के बाद रूस पर पश्चिमी देशों ने कड़े आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिये हैं, जिससे रूस से होने वाले हथियारों और वेपन सिस्टम पर बड़ा असर हुआ है। रक्षा जरूरतों के लिये काफी हद तक रूस पर निर्भर भारत को अपनी रणनीति बदलनी पड़ी है। चुनौती बड़ी है क्योंकि लद्दाख सीमा पर चीन के खिलाफ तैयारी भी पूरी रखनी है। 2020 में झड़प के बाद से भारत ने बड़ी तेजी से अपना रक्षा भंडार बढ़ाया है तथा मजबूतीकरण किया है फिर भी यूक्रेन पर हमला बोलकर रूस ने पश्चिमी देशों की नाराजगी मोल ली है। रूस पर कड़े आर्थिक प्रतिबन्ध लगाए गये है। परिणामस्वरूप भारतीय बैंक रूसी हथियार कम्पनियों को शेड्यूल पेमेन्ट नहीं कर पा रहे हैं। संभावना यह भी है कि अमेरिका अभी रूस पर CAATSA के तहत प्रतिबन्ध लगा सकता है। इसका निकट भविष्य में होने वाली हथियारों की सप्लाई पर गहरा असर पड़ेगा।

रूस ने भारत को पहला मिग–21 का विमान 1963 में मिला था उसके बाद से दोनो देशों के रक्षा सम्बन्ध लगातार मजबूत होते चले गये। वर्ष 2021 तक रूस ने भारत को 70 बिलियन डॉलर से ज्यादा के हथियार दिये। भारत का 70 प्रतिशत मिलिट्री हार्डवेयर सॉफ्टवेयर सोवियत/रूसी है। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत अपनी रक्षा जरूरतों के लिये फिलहाल रूस पर कितना निर्भर है। भारत की तीनों सेनाओं में से एयरफोर्स रूस पर सबसे ज्यादा निर्भर है। उसके लड़ाकू विमानों की ज्यादातर फ्लीट रूसी है। नेवी में भी बडे पैमाने पर रूस से आयात करती है। हालांकि रूस ने भारत को भरोसा दिलाया है कि दोनों देशों के बीच रक्षा सप्लाई प्रभावित नहीं होगी।

भारत और रूस की मैत्री बहुत पुरानी है। साठ के दशक में जब भारत अमेरिका से F-104 स्टार फाइटर्स खरीदना चाहता था, किन्तु अमेरिका भारत को हथियार सप्लाई करने से कतरा रहा था तथा पाकिस्तान को ऐसे फाइटर्स पहले से ही बेच चुका था। अतः भारत ने रूस का रूख किया और बेहतर मिग–21 जेट्स खरीदे। इस तरह मिग–21 1963 में भारतीय वायुसेना का हिस्सा बना। हालांकि पिछले दो दशकों में अमेरिका और भारत के बीच मैत्री बढ़ी तथा रक्षा सौदे की साझेदारी बढ़ी है मगर रूस अभी भी भारत के लिये सबसे बडा हथियार सप्लायर है।

वर्तमान में भारतीय सशस्त्र बलों के 65 प्रतिशत हथियार रूसी मूल के कल–पुर्जों के लिये रूस पर निर्भर है। अमेरिका के कड़े विरोध के बावजूद भारत ने रूस से S-400 ट्रायम्फ मिसाइल खरीदी। भारत और रूस को आर्थिक क्षेत्र में अधिकाधिक स्वतन्त्रता प्राप्त है, लेकिन वाणिज्यिक सम्बन्धों को बढ़ावा देने में उन्होंने भारी विफलता ही पाई है।

रूस के लिये भारत का महत्व

अमेरिका यूरोप और जापान के साथ लगातार संघर्ष ने मास्को को बीजिंग के सबसे निकट ला दिया है, लेकिन रूस, चीन जैसे पड़ोसी पर पूरी तरह निर्भर रहने के खतरों से भी भली भांति परिचित है। जबकि पश्चिम के साथ रूस के सम्बन्धों को फिर से स्थापित करने के लिये अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। भारत के साथ पारंपरिक साझेदारी को बनाए रखना मास्को के लिये राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। रक्षा सम्बन्ध जो भारत–रूस

सम्बन्ध का आधार है–ने क्रेता–विक्रेता रूपरेखा से अधुनातन रक्षा प्रौद्योगिकी एवं शस्त्र प्रणालियों के संयुक्त अनुसंधान विकास एवं उत्पादन के लिये सतत् कार्यक्रम में शिफ्ट के साथ नई गतिशीलता प्राप्त की है। संयुक्त विकास एक नया मन्त्र है जो ब्रम्होस मिसाइलों, पांचवी पीढ़ी के फाइटर एयरक्राफ्ट, मल्टी ट्रान्सपोर्ट एयरक्राफ्ट तथा भारत में सुखाई–30 एयरक्राफ्ट तथा टी0–90 टैंक के लाइसेंसी उत्पादन में प्रतिबिम्बित होता है।

हथियारों के आयात में विविधता लाने के लिये भारत ने कई योजनायें तैयार की है। भारत में पिछले कुछ वर्षों में न केवल अन्य देशों में, बल्कि घरेलू स्तर पर भी अपने हथियार प्लेटफार्म बेस का विस्तार करने के लिये प्रंयास किया है। एस0आई0पी0आर0आई ने पिछले वर्ष अपनी अर्न्तराष्ट्रीय हथियार हस्तान्तरण प्रवषत्ति रिपोर्ट में उल्लेख किया था कि भारत द्वारा वर्ष 2011 –15 और वर्ष 2016–20 के बीच हथियार के आयात में 33 प्रतिशत की कमी आई है। अमेरिका, रूस के अलावा फ्रांस और इजरायल भारत के लिये दूसरे और तीसरे सबसे बड़े हथियार आपूर्तिकर्ता देश बन गये है। तथापि आज भी रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध जारी रहने के बावजूद आज भी भारत और रूस के बीच सम्बन्ध तटस्थ बने हुये हैं।

सुझाव और निष्कर्ष

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत के लिये पाकिस्तान और चीन बढ़ते खतरे के रूप में है। इसके साथ भारत इन देशों पर नकेल कसने के लिए हथियारों का उत्पादन बढ़ाने की महत्वाकांक्षी योजनायें बना रहा है। आने वाले वर्षों में लड़ाकू विमानों, वायु रक्षा प्रणालियों, जहाजों और पनडुब्बियों की प्रस्तुतीकरण के कारण भारत के हथियारों के निर्यात में वृद्धि होने की उम्मीद है इसलिये भारत के लिये यह महत्वपूर्ण है कि वह अपने आधार में विविधता लाये। किसी एक राष्ट्र पर बहुत अधिक निर्भर न रहे क्योंकि अधिक निर्भरता किसी के द्वारा शोषण का शिकार बनाती है इसलिये हथियार के मामले में भारत को बहुत सजग रहने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष तौर पर भारत एक शान्तिप्रिय देश है तथा वह हर राष्ट्र से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करके चल रहा है। आज भारत विश्व गुरू के पद पर आसीन है। विश्व में भारत अपना एक अलग ओहदा बना चुका है। रूस पहले भी भारत का घनिष्ठ मित्र था और आज भी है। भारत पाकिस्तान युद्ध में जहाँ रूस ने भारत की बढ़–चढ़कर सहायता की, वहीं भारत कोरोना महामारी के दौरान पूरे विश्व में अपना परचम लहराया। रूस–यूक्रेन के युद्ध में भारत दोनों देशों में शान्ति स्थापित करने के लिये मध्यस्थ की भूमिका निभा रहा है। आज पूरा विश्व भारत की तरफ आशा की दृष्टि से देख रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. 28 मार्च दैनिक जागरण, लखनऊ, 2022।
2. 30 मार्च राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ, 2022।
3. वर्तमान कमल ज्योति पत्रिका (फरवरी–मार्च) 2022।
4. 27 मार्च ''एक झलक राजधानी को'' लखनऊ, 2022।
5. मोहन रावत, भारत रूस सम्बन्ध, ज्ञान पब्लिशर्स, दिल्ली, 1998।

****